



"Buddha: fourth noble truth"

(बुद्ध: चतुर्थ आर्य सत्य)
 महात्मा बुद्ध ने इस सत्य को दुःखों से परिपूर्ण माना है, एवं दुःखों के सम्बन्ध में जीवन और प्रथम सभी मानव को उत्तर जीवन के लिए उनके अनुसार दर्शन का उद्देश्य है। दुःखों को दूर करने का उपाय ही दुःख निरोध मार्ग कहलाता है।

बुद्ध ने चतुर्थ आर्य सत्य में दुःख निरोध मार्ग की चर्चा की है। यह वह मार्ग है जिस पर चलकर बुद्ध ने निर्वाण को अपनाया था। दूसरे लोग भी इस मार्ग पर चलकर निर्वाण की अनुभूति प्राप्त कर सकते हैं। जिन कारणों के द्वारा दुःखों की उत्पत्ति होती है, उनको मिटाने का उपाय ही निर्वाण का मार्ग है।

बुद्ध का यह आर्य सत्य उनके धर्म और नीति शास्त्र का आधार स्वकथ है। इसलिए इस मार्ग की महत्ता अत्यधिक बढ़ गई है। इस मार्ग को आष्टांगिक मार्ग (The Eight fold Noble Path) कहा जाता है क्योंकि इस मार्ग के आठ अंग बतलाये गये हैं। वे इस प्रकार हैं।

1. सञ्चक - दृष्टि (Right Views) - बुद्ध ने दुःख का मूल कारण आविद्या को माना है। आविद्या के कारण विभ्रम दृष्टि (Wrong Views) उत्पन्न होती है।

जिसके फलस्वरूप अनिष्ट दुःखद और
 अनात्मक वस्तु को निलय स्वरूप और
 आत्मरूप समझ बैठते हैं इस दृष्टि
 को छोड़कर वस्तुओं के यथास्थ स्वरूप
 पर सतत ध्यान रखना चाहिए। सभी
 को समझ दृष्टि कहते हैं।

संस्कृत के अन्तर्गत निर्वीण प्राण
 करने वाले अथवा के सांसारिक
 विषयों की आसक्ति पुरुष के प्राण
 क्षय और हिंसा इन दोनों को परिच्छेद
 करने का संकल्प करना चाहिए। वहीं
 का नाम सम्यक संकल्प है। इसमें
 सत्य और परीपकार की भावना
 है।

3. सम्यक वाक (Right
 speech) सत्य प्रिय वचनों का प्रयोग
 के द्वारा स्वयं पदों के सम्यक संकल्प
 निश्चय होना चाहिए। अर्थात् हमें
 मिथ्यावादी निधु, अप्रिय वचन
 तथा वाचालता से बचना चाहिए।

4. सम्यक कर्मान्त
 (Right action) सम्यक्वाक का
 पालन करनेवाला अथवा भी
 कर सकता है। इससे निर्वीण प्राण करने
 वाले अथवा के अन्तर्गत निर्वीण प्राण करने

के पालन का अथवा के सम्यक कर्म
 पूरे कर्मों का आकांक्षा दिया है
 कर्मान्त है। अथवा के सम्यक
 अथवा के अनुसार

अपने काम तीन हिंसा, स्तैय
 और हिंसा, स्तैय
 कुमान पात्रिक को हमारे जीवन को
 हिंसा नहीं करना हमारे जीवन को
 नष्ट कराना तथा हिंसा प्रख का
 त्याग करना चाहिए।

5. सम्यक - आजीविका:
 (Right - livelihood) सम्यक आजीविका
 का अर्थ है इमानुदारी से जीव को
 पालन करना। जीविका - निर्वहका
 को प्रोत्साहित करना चाहिए। जीविका
 निर्वाह के लिए कोचित मार्ग का
 अनुसरण और निर्णय रणाय का
 पालन करके अपने सम्यक संकल्प
 को सुदृढ़ करना चाहिए।

6. सम्यक आश्राम
 (Right efforts) उपर्युक्त पांच
 मार्गों पर चलकर भी साध्यक
 निर्वाण को अपनाने में असफल
 रह सकता है। अतः इस बात को
 निरंतर प्रयत्न करना ही आवश्यक
 है। (i) पुराने विचारों को त्याग
 निकालना (ii) सब तरह विचारों को
 मन में आने से रोकना (iii) अर्थ
 भावों को मन में भरना और
 (iv) इन भावों को मन में कायम
 रखने के लिए सतत क्रियाशील
 रहना, सम्यक आश्राम कहे जाता
 है।

इस प्रकार सम्यक आश्राम
 वह क्रिया है जिनसे अमृत
 मनः विद्यते का अर्थ होता है
 तथा अमृत मनः विद्यते का प्राप्ति

दिता है।

(Right mindfulness) न. सम्यक् - स्मृति -
 जिनका पालन करने को लक्ष्य सम्यक् स्मृति
 जिन विषयों का ज्ञान हो। विभीषण
 स्वयं स्मरण रखनी परभाव्यक वरावर तत्क
 निष्कण प्राप्त करने वाले शक्ति को 'शरीर'
 को 'संवेदना' मन को 'मन' संवेदन
 अनुभव अज्ञानता तथा शरीर मन
 संवेदना इत्यादि को स्थायी स्व
 सम्यक् सममन्य लभता है तथा
 इन विषयों से शक्ति ही जाता है
 जिनके फलस्वरूप इन बलुओं के जाति
 जिन पर इस दुःख को अनुभूति
 जिनकी अतः इसके वास्तविक
 स्वरूप को स्मरण रखना नितात आव्यक
 संकेत करके इस दुःख को शरीर
 समझाने में आकर शरीर की प्रवृत्ता
 शरीर को प्राप्त शान्त अनुभाव का भाव
 स्वता है तथा जिस स्थायी सममता
 इस शरीर का नष्ट होना कृता तथा
 मिष्टी का स्वाध्वनन तथा शरीर
 मिल जूना समझाने में दुष्ट गौरव शरीर
 इन बातों से शरीरिक प्रमाणित

होती है। इस प्रकार भाववान बलुओं
 की स्मृति सम्यक् स्मृति है।
 सम्यक् स्मृति के कारण मानव स्मृति
 विषयों से विरक्त हो जाता है।

बौद्ध सांसारिक बन्धनों में नहीं पड़ता वह अनुष्ठा को समाधि के योग्य बना देता है।

(Right Concentration) का पालन करके जो अनुष्ठा अपनी बुराई को दूर कर लेता है वह सम्यक समाधि में प्रविष्ट करने योग्य हो जाता है।
 8. सम्यक - समाधि (Right Concentration) उपर्युक्त चार अवस्थाओं में सम्यक समाधि पर ही विशेष ध्यान दिया जाता है।
 न समाधि की चार अवस्थाओं को माना है वे इस प्रकार हैं।

1. समाधि की प्रथम अवस्था में साधक को कुछ के चार आय सत्वों का पालन एवं नियंत्रण करना पड़ता है। यह तक - वितर्क के प्रकार के उद्वेगों का निराकरण वह स्वयं करता है।

2. ध्यान की दूसरी अवस्था में आनन्द एवं शान्ति की अनुभूति होती है। आनन्द एवं शान्ति की चेतना भी इस अवस्था में वर्तमान रहती है।

3. समाधि की तीसरी अवस्था के प्रारम्भ में साधक को आनन्द एवं शान्ति की चेतना के प्रति उदासिना का भाव आता है।

आनन्द एवं शान्ति की चेतना प्राप्त होने से साधक प्रतीत होती है। इसलिये आनन्द

नवन ज्ञान की प्रयास किया जाता है। चेतना से दूर रहने का
 आनन्द स्वभाव शान्त होता है। इस अवस्था में
 आभाव का ज्ञान प्राप्त होता है। परन्तु बारीक
 आराम का ज्ञान विद्यमान रहता है।
 अवस्था में शरीर समाधि की योग्य
 का भाव भी नष्ट हो जाता है। आराम स्वभाव
 अवस्था में प्राप्त होने के बाद
 विचारित महत् किम्वदन्त संज्ञा से विभाजित
 जाता है। निवृत्तियों का पुनर्निर्माण
 इस अवस्था में सभी प्रकार के दुर्षों
 का अन्त हो जाता है। यह अवस्था
 स्वभाव - स्वभाव पर है। यह निवृत्त

मार्ग को प्रकाश की लक्ष्य के अपराधिक
 विज्ञान अंगों में शील समाधि नामक
 संकल्प है। सम्यक वापस किया जा
 सके। संकल्प प्रज्ञा के अन्तर्गत
 आते हैं। सम्यक वापस के अन्तर्गत
 आते हैं। शील के अन्तर्गत, सम्यक
 वापस के अन्तर्गत आते हैं।
 सम्यक समाधि के अन्तर्गत आते हैं।

दुर्षों से छुटकारा पाने की अनुभार
 सब शान्ति के अन्तर्गत अनुभार
 मनुष्य के अन्तर्गत अनुभार
 लोला निवृत्तियों को प्राप्त कर